

nie in क über P. 7, 3, 59, V Artt. 1 (vgl. jedoch अवरोकिन्, अरोक, विरोक). 1) med. *scheinen, leuchten, hell sein* (von Sonne, Feuer, Sternen u. s. w.): रोचते रोचना दिवि RV. 4, 6, 1. यः शुक्र इव सूर्यो क्षिप्रयामिव रोचते 43, 5. रोचत घोः 4, 1, 17. अग्निः अग्ने रुको न रोचत उपाके 4, 10, 5, 7, 3, 9. अग्निर्वनेषु रोचते 8, 43, 8, 3, 2, 3. उषसः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रूचानाः 4, 51, 9. रुचे ज्ञनत् सूर्यम् zum Scheinen 9, 23, 2. केनाकराकरोरुचे AV. 10, 2, 16. यैरान्यद्देवैर्चेत कृत्तमन्यत् RV. 3, 55, 11. स्वर्णा वस्तोरुष-सामरोचि 7, 10, 2. 77, 2. रथः पविर्भी रूचानः 69, 1. दिवि तारो न रोचते VALAKH. 7, 2, 8, 5. VS. 8, 49. AV. 5, 20, 6. 17, 1, 21. ÇAT. Br. 14, 3, 2, 7. सूरौ न रुरुचान् RV. 1, 149, 3. रुरुचे साधिकं सुभ्रूपतती नभस्तलात् । सीदामनीव विभ्रष्टा द्योतयती दिशस्त्रिषा ॥ MBH. 1, 6613. रोचमानो म-हाराज विजुलोकं च गच्छति 3, 7043. सा दीप्तशस्त्रप्रवरा दैत्यानां रुरुचे (शुभ्रुभे die neuere Ausg.) चमः HARIV. 2659. R. 5, 10, 2. BhaG. P. 14, 2, 27. रुचित glänzend, blank: कार्षीपाण P. 1, 2, 21, Sch. यथा न्वेव रुचितः स्या-त्तथा धवितव्यः (धर्मः) leuchtend d. h. von der Gluth bestrahlt ÇAT. Br. 14, 1, 2, 33. KĀT. Ça. 26, 4, 4. ÇĀṆKH. Ça. 5, 9, 29. — 2) act. *scheinen —, leuchten lassen*: महि द्योती रुरुचुर्द्ध वस्तोः RV. 4, 16, 4. भृहन्निषु सु-रुचा रुरुच्याः 6, 35, 4. रथस्य भानुं रुरुचुः 6, 62, 2. — 3) *leuchten so v. a. in vollem Glanz erscheinen, prangen*: अथो रश्मिना प्रतिवृत्तो भूयिष्ठं रोचते ÇAT. Br. 13, 2, 7, 9. येनेदम्य रोचते को अस्मिन्वर्णामा भरत् die Farbe, die es schmückt, AV. 14, 8, 16. यो ऽग्निं चित्वा न रोचते TS. 5, 3, 10, 3. KĀT. 9, 16. प्राणेन रोचते ÇAT. Br. 7, 5, 2, 12. स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्देवते कुलम् । तस्यां वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ M. 3, 62, 61. नृतेन राजते काचित्काचिद्वीतेन रोचते । वीणादिवादनज्ञानान्या कात्ता च रो-चते ॥ KATHĀS. 47, 113. स ङ्कताशिष्णाक्रातः प्रदीप इव नारुचत् RĀGA-TAR. 4, 374. शक्रं रोचमानं स्वया अग्निं BhaG. P. 6, 10, 18. क्षमया रोचते लक्ष्मीर्ब्रह्मा सौरा यथा प्रभा 9, 15, 40. न तथैतर्कि रोचते गृहेषु गृहसंपदः 4, 26, 14. विज्ञानं चास्य रोचते M. 4, 20. कश्चिद्देवेऽज्ञानपदे कश्चिद्वाष्ट्रं च मे पशः MBH. 12, 3350. — 4) schön —, gut erscheinen, gefallen; mit dat. (P. 1, 4, 33. Vop. 5, 15) und gen.; med.: यद्यद्देवते विप्रैः M. 3, 231. MBH. 1, 4243. रोचतां गमनं मह्यं तवापि mir und dir 14, 392. R. 2, 46, 10. ÇĀK. 24, 6, 71, 15. MĀLAY. 12, 6. KĀM. NĪTIS. 8, 8. Spr. 683. KATHĀS. 19, 45. 24, 141. RĀGA-TAR. 6, 51. 65. वासो मम न रोचते MBH. 1, 3327. 7441. 7550. 2, 2681. 3, 16687. 4, 13. 5, 7415. 13, 770. 14, 1881 (wo mit der ed. Bomb. मे st. मी zu lesen ist). R. 1, 9, 33. 68, 16. 2, 21, 2. 29, 15. 30, 42. 46, 24. 82, 19. 3, 13, 11. 4, 18, 14. Spr. 1147. 2526. BhaG. P. 3, 24, 31. 4, 30, 37. 8, 6, 31. MĀRK. P. 48, 40. PAÑĀT. 189, 22. 190, 2. नरेन्द्रस्य तद-रुचे वचः HARIV. 5156. रिपोर्लक्ष्मीर्मा ते रोचिष्ठ MBH. 2, 1962. किमर्थं ते — नैतद्देविष्यते वचः R. 5, 92, 18. act.: तद्द्दस्यापि हरोच वाक्यम् 4, 53, 26. एकात्तेन हि सर्वेषां न शक्यं तात रोचितुम् Allen gefallen MBH. 12, 3358. mit einem infn.: रामाय यैवराड्यं मे दातुमत्रैव रोचते R. Gorr. 2, 2, 4. Häufig ohne Hinzufügung der Person: अन्यत्र रोचते MBH. 1, 647. 5582. R. 3, 21, 7. VARĀH. BRH. S. 104, 3. कुरुष यद्देवते was (dir) gefällt PAÑĀT. 70, 10. यदि रोचते R. 2, 21, 21. BhaG. P. 9, 20, 14. MĀRK. P. 16, 75. PAÑĀT. 1, 9, 4. रोचमानं gefallend, erwünscht BHATT. 8, 73. अ० Spr. 2310. रोचमानमिवातिथिम् wie einen lieben Gast MBH. 7, 32. रुचितं URĀDIS. 4, 185. dass.: पिद्ये स्वदितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु मुश्रुतम् । संप-न्नमित्यभ्युदये देवे रुचितमित्यपि ॥ M. 3, 254. रुचितं यदि ते MBH. 3, 16828.

HARIV. 40217. MBH. 5, 462. 13, 774. 1476. R. Gorr. 1, 74, 6. 2, 30, 86. 6, 93, 13. RĀGA-TAR. 6, 66. यदस्य रुचितं कर्तुम् MBH. 1, 7952. उभयतो रु-चिते wenn es beiderseits gefällt ÇĀṆKH. GRHJ. 1, 6. lecker UGĀVAL. zu URĀDIS. 4, 185. — 5) *Gefallen finden*: न रोचे MBH. 1, 7444. mit acc.: समुदाचारसंयुक्तमिदं वाक्यमरोचताम् R. 5, 92, 15. mit dat.: रुरुचुः सर्वं वा-साय so v. a. verlangen nach HARIV. 5384.

— caus. रोचयति, ०ते, अत्ररुचत्; 1) *scheinen —, leuchten lassen*: कृष्यन्नुषसंमर्चयः सूर्यं कृष्यन्नरोचयः RV. 3, 44, 2. 8, 3, 6. 29, 10. 9, 37, 4. 63, 7. अत्ररुचत्तुषसः पृश्निरग्निः 83, 3, 49, 5. — 2) *beleuchten, erhellen*: स रोच-यज्जनुषां रोदसी उभे RV. 3, 2, 2. 6, 39, 4. 9, 9, 3. BhaG. P. 2, 5, 11. 8, 2, 2. 11, 26. स्वयं लोकं रोचयस्व यावत्तमिच्छसि ÇAT. Br. 13, 2, 7, 11. — 3) *gefallen —, angenehm machen*: ब्रह्मणास्पते पतिमस्यै रोचय AV. 14, 1, 31. श्रेष्ठी पात्रे रोचयत्येव यं कामयेत तम् AIR. Br. 3, 30. तस्मै हिमाद्रेः प्रयतां तनूनां यतात्मने रोचयितुं यतस्व KUMĀRAS. 3, 16. न त्वरोचयतात्मानम् BHATT. 8, 64. — 4) *bewirken, dass Jmd (acc.) Gefallen findet, — Verlangen fühlt nach (dat.)*: स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकारम् Gtr. 10, 2. — 5) *(sich Etwas schön —, gut erscheinen lassen) Gefallen finden an, betreiben, gutheissen, für gut finden, erwählen; med. P. 1, 3, 89. Vop. 23, 58. mit acc.*: अतो भयं न रोचये MBH. 1, 5578. न ते वाचं रो-चयते 14, 240. R. 2, 82, 14. 3, 61, 30. अथैव गमने बुद्धि रोचयस्व 15, 46. यदि त्वात्यक्तं वासं रोचयेत गुरोः कुले M. 2, 243. R. 2, 54, 24 (26 Gorr.). न विप्रदं रोचयते बलस्थैः Spr. 5261. mit infn.: न त्वं रोचयसे नेतुं मा-मितः R. Gorr. 2, 29, 22. MĀRK. P. 8, 215. Häufiger act.: गमनमरोचयन् MBH. 1, 3822. R. 1, 36, 3 (37, 3 Gorr.). कृत्तस्य दर्शनं शक्रो रोचयामास HARIV. 3960. स साधु कौत्सेय इतो वासमर्जुन रोचय MBH. 4, 8, 15, 580. HARIV. 6416. R. 2, 56, 13, f. 3, 2, 1. स रोचयामास पेश बन्धं प्रसञ्च रतोभिरवग्रहं च 5, 44, 18. वरुणां रोचयति मे 7, 17, 10. पुनर्युद्धमरोचयन् MBH. 9, 1351. नहि पापमपायात्मा रोचयिष्यति पाण्डवः 1, 5741. श्रोचयन्सुरा धर्म धर्मं तन्य-त्रिरे ऽसुराः 3, 8492. Spr. 4331. BhaG. P. 5, 13, 17. 14, 30. तेषां किंचित्स्म-रोचय MBH. 4, 10. R. 3, 21, 8. पितरं रोचयामास दशरथं नृपम् er erwählte sich zum Vater R. 1, 13, 2 (1 Gorr.). राजानं रोचयामासुं शुभ्रतम् 43, 1 (44, 1 Gorr.). beabsichtigen, im Sinne haben: रोचयन्गणाश्रेष्ठं देवानाममितौ-ज्ञसाम् HARIV. 245. 253. Verz. d. Oxf. H. 54, b, 12. pass. gefallen, erwünscht sein: तस्मोद्दो रोच्यतां मन्त्रो रामं प्रति R. 5, 77, 6. — 6) = simpl. gefal- len: नैतद्देवते मयम् R. Gorr. 2, 117, 10.

— अति 1) med. *durchleuchten, hinleuchten über* Nir. 3, 11. RV. 4, 94, 7. 10, 51, 3. तिरो धन्वार्ति रोचते 187, 2. AV. 13, 1, 86. AIR. Br. 4, 18. सर्वाः प्रजाः ÇAT. Br. 7, 4, 4, 10. 14, 5, 4, 9. त्रीनत्यरोचे — लोचान् BhaG. P. 1, 16, 34. — 2) med. act. *heller leuchten als, überstrahlen; mit acc.* अत्यरोचश्च — भास्करं स्वेन तेजसा MBH. 3, 486. स ब्रह्मवर्चसेन सभा ब्र-ह्मर्षिगणासंजुष्टामत्यरोचत BhaG. P. 8, 18, 18. अत्यरोचत (so die ed. Bomb.) तान्स्वर्वाण्यष्ट्युभः समागतान् MBH. 7, 1028. यथा मां नातिरोचति (नाति-वो० ed. Bomb., = न निन्दति Comm.) BhaG. P. 3, 14, 21. — caus. 1) *unangenehm empfinden*: स्त्रीत्वं नैवातिरोचयन् v. l. der ed. Bomb. für नैव तिरोचयन् der ed. Calc. MBH. 5, 7427. — 2) *कर्मणा Etwas in's Werk zu setzen suchen*: मनसा चित्तयन्यायं कर्मणा नातिरोचयन् (नाभिराचयेत् ed. Calc.) । न प्राप्नोति तस्य फलम् MBH. 5, 3314 nach der Lesart der ed. Bomb.